B.A. I (Hon's) Paper Ist

Paper-I

Philosophy
Dr. Saroj Rani
D. K. College, Dum.

Q. शंकर के मायावाद संबंधी अवधारणा पर प्रकाश डालें।
Or, रामानुज किसप्रकार शंकर के मायावाद का खण्डन करते हैं?

Ans: शंकर के दर्शन में मायावाद संबंधी अवधारणा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने मायावाद के आधार पर ही संपूर्ण विश्व की व्याख्या प्रस्तुत की है। भारतीय विचारधारा में 'माया' शब्द का उल्लेख वेद, उपनिषद में देखने को मिलता है। वेद में यह वर्णित है कि इन्द्र 'माया' के द्वारा विभिन्न रूप धारण करते हैं। उपनिषद में भी 'माया' और 'अविद्या' का विचार व्याप्त है। प्रो० रानाडे ने अपनी पुस्तक 'A Critical Survey of Upnisadic Philosophy' के अन्तर्गत कहा है कि 'माया' और 'अविद्या' का स्रोत उपनिषद है। अर्थात शंकर के 'मायावाद' का प्रेरणा स्रोत उपनिषद को माना जाता है।

शंकर के दर्शन में 'माया' और 'अविद्या' का एक ही अर्थ में प्रयोग किया गया है। जिसतरह से ब्रह्म और आत्मा को identical (अभिन्न) स्वीकार किया गया है। उसीतरह माया और अविद्या अभिन्न है। शंकर ने अपने दार्शनिक विचार के अन्तर्गत माया, अविद्या, विवर्त, भ्रम, अध्यास, अध्यारोपण इत्यादि शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में किया गया है। लेकिन बाद के वेदान्तियों ने माया और अविद्या में भेद किया है। इनलोगों के अनुसार माया का आश्रय स्थान ब्रह्म है, जबकि अविद्या जीव में निवास करता करता है। माया भावात्मक है, क्योंकि यह विश्व की उत्पत्ति करती है, जबकि अविद्या निषेधात्मक है क्योंकि यह ज्ञान का अभाव है। माया का स्वरूप सात्विक है, जबकि अविद्या त्रिगुणात्मक है।

अब, स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि माया का स्थान कहाँ है? शंकर के अनुसार माया का निवास स्थान ब्रह्म है, लेकिन फिर भी माया ब्रह्म को प्रभावित नहीं करती। जिसप्रकार, जादूगर जादू से प्रभावित नहीं होता उसीप्रकार ब्रह्म भी माया से प्रभावित नहीं होता। ब्रह्म अनादि है, और माया ब्रह्म में निवास करने के कारण यह भी अनादि है।

शंकर का कहना है कि माया ब्रह्म की शक्ति है, जिससे नानारूपात्मक जगत का निर्माण करती है। जिसप्रकार जादू जादूगर की शक्ति है, उसीप्रकार ब्रह्म माया की शक्ति है, जिसके द्वारा विश्व की रचना करती है। ब्रह्म जब माया से युक्त होता है तो विश्व का सृष्टि करता है। माया से युक्त ब्रह्म को ही शंकर ने ईश्वर की संज्ञा दी है। इनका विचार है कि जब सृष्टि प्रक्रिया समाप्त हो जाता है, तो ईश्वर माया से मुक्त हो जाता है तथा वह पुनः ब्रह्म बन जाता है।

भारतीय दर्शन में सांख्य ने भी प्रकृति के द्वारा ही सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या करने का प्रयास किया है, उसीप्रकार शंकर ने माया के आधार पर सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या करने का प्रयास किया है। सांख्य ने प्रकृति के समान शंकर का माया भी जड़ एवं अचेतन है।

Scanned with CamScanner

साथ ही, एक सत्त्वगुण दोनों में यह है कि प्रकृति की तरह माया को भी त्रिगुणात्मक माना गया है।

लेकिन सांख्य के प्रकृति और शंकर के माया में साम्यता होने के बावजूद भी दोनों में अन्तर है। दोनों में अन्तर यह है कि प्रकृति स्वतंत्र है, जबकि माया परतंत्र है। प्रकृति अपने अस्तित्व के लिए किसी पर आश्रित नहीं है, जबकि माया अपने अस्तित्व के लिए ब्रह्म पर आश्रित है। माया को Unreal माना गया है। जबकि प्रकृति को real माना गया है। अगर शंकर माया को Unreal नहीं मानते तो वे अद्वैतवादी नहीं रह पाते। लेकिन सांख्य-दर्शन प्रकृति एवं पुरुष दोनों को स्वतंत्र सत्ता के रूप में स्वीकार करने के कारण द्वैतवादी दर्शन हो जाता है।

शंकर ने अपने दार्शनिक विचार के अन्तर्गत माया की विभिन्न विशेषताओं पर प्रकाश डाला है, जो निम्न हैं :→

माया की पहली विशेषता है कि यह एक अध्यास रूप है। अध्यास — जो वस्तु जहाँ नहीं रहता है, वहाँ उसको प्रतिषिद्ध करना ही, अध्यास कहलाता है। जैसे— रस्सी के स्थान पर सर्प का ज्ञान होना एक प्रकार का अध्यास है, उसीप्रकार माया के द्वारा ब्रह्म विश्व के रूप में अध्यास है।

विवर्त — माया की दूसरी विशेषता है कि यह विवर्त मात्र है। माया ब्रह्म का विवर्त है, जो व्यवहारिक जगत में दिखाई पड़ता है।

शक्ति — माया ब्रह्म की शक्ति है, जिसके द्वारा ब्रह्म नानारूपात्मक जगत की सृष्टि करता है। माया से ब्रह्म जब युक्त होता है तभी विश्व की सृष्टि संभव होता है।

शंकर ने माया को अनिर्वचनीय कहा है क्योंकि

अनिर्वचनीय — क्योंकि माया न तो सत्य है और न असत्य है न सत्य असत्य दोनों है। माया को सत्य नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि शंकर ब्रह्म के अतिरिक्त किसी को सत्य नहीं मानते हैं। इसे असत्य भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि नानात्मक जगत को उपस्थित करता है। माया को सत्य तथा असत्य दोनों नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ऐसा कहना विरोधात्मक होगा। अतः शंकर ने माया को अनिर्वचनीय कहा है।

अस्थायी — माया अस्थायी है क्योंकि ज्ञान हो जाने के बाद माया का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। माया को अव्यक्त एवं नैतिक कहा गया है।

अनादि — माया को अनादि कहा गया है क्योंकि इसका निवास स्थान ब्रह्म है, एवं ब्रह्म अनादि है अतः माया भी अनादि है।

डॉ० राधाकृष्णन ने माया के मुख्यतः छः रूपों में प्रयोग बतलाया है — "विश्व स्वतः अपनी व्याख्या करने में असमर्थ है,

जिसकी व्याख्या माया के द्वारा होती है। ब्रह्म और जगत के बीच संबंध की व्याख्या माया के द्वारा संभव है। विश्व जो ब्रह्म पर आश्रित है, माया कहा जाता है। ब्रह्म का जगत में दिखाई पड़ना माया कहलाता है। ईश्वर अपने को माया के द्वारा ~~अनेक~~ विश्व रूपों के रूप में अभिव्यक्त करता है। ईश्वर की शक्ति माया है।"

अब प्रश्न उठता है कि माया का क्या कार्य है? शंकर के अनुसार, माया का दो कार्य है- (i) आवरण और (ii) विक्षेप। माया वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को ढंक लेती है ~~अर्थात~~ अर्थात माया सत्य पर पर्दा डाल देती है। जैसे रस्सी के स्थान पर सर्प का दिखाई पड़ना। यहाँ रस्सी के वास्तविक स्वरूप पर आवरण है। अर्थात माया अपने निषेधात्मक कार्य के द्वारा अपने वास्तविक स्वरूप पर आवरण डाल देती है, माया का दूसरा कार्य यह है कि जो वस्तु वहाँ नहीं रहता है, वहाँ उसको उपस्थित करता है, इस क्रिया को विक्षेप कहते हैं, यह माया का भावात्मक कार्य है। जैसे- रस्सी को सर्प के रूप में दिखाई पड़ना। डॉ० राधाकृष्णन ने कहा है कि "Maya has the two functions of Concealment of the real and the projection of the unreal.

यद्यपि शंकर ने अपने दार्शनिक विचार के अन्तर्गत माया-वाद की व्याख्या तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया है, फिर भी मायावाद की आलोचना आलोचकों ने की है इसके आलोचकों में रामानुजाचार्य प्रमुख हैं:-

(i) आश्रयानुपपत्ति- रामानुज का पहला आक्षेप यह है कि माया या अज्ञान का निवास स्थान कहा है? यदि यह स्वीकार किया जाये कि माया का निवास स्थान ब्रह्म माना जाएगा। तो अद्वैतवाद का खण्डन हो जाएगा। क्योंकि शंकर ब्रह्म के अतिरिक्त किसी को सत्य नहीं मानते। फिर यदि यह कहा जाये कि अविद्या का निवास जीव में है तो यह भी अमान्य होगा। क्योंकि जीव स्वयं अविद्या का कार्य है। जो कारण है, वह कार्य पर आश्रित नहीं रह सकता।

उपर्युक्त आक्षेप के उत्तर में वेदान्तियों ने माया का निवास स्थान ब्रह्म माना है, लेकिन फिर भी माया से ब्रह्म प्रभावित नहीं होता, जिसप्रकार जादूगर जादू से स्वयं प्रभावित नहीं होता।

(ii) तिरोधानुपपत्ति- रामानुज का दूसरा आक्षेप यह है कि माया ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप पर पर्दा कैसे डाल देती है? ब्रह्म को अद्वैत-दर्शन में स्वयं प्रकाशवान माया गया है जो स्वयं प्रकाश है उसे छिपाया कैसे जा सकता है?

इस आक्षेप के उत्तर में शंकर के अनुयायी का कहना है कि जिसप्रकार मेघ सूर्य को आच्छादित कर देता है इसीप्रकार जिसतरह मेघ सूर्य के प्रकाश को नष्ट नहीं कर देता।

(iii) स्वरूपानुपपत्ति :- रामानुज का प्रश्न यह है कि अद्वैत वादियों के अनुसार अविद्या का स्वरूप क्या है? अविद्या भावात्मक है या अभावात्मक? इसे

Scanned with CamScanner

इसे भावात्मक मानना तर्कसंगत नहीं होगा? क्योंकि अविद्या अज्ञान है, अर्थात् ज्ञान का अभाव। इसके अतिरिक्त भावात्मक होने के लिए इसे अविनाशी होना चाहिए लेकिन माया अस्थायी है। अगर माया को अभावात्मक माना जाये तो फिर विश्व की उत्पत्ति की व्याख्या कैसे संभव है। अतः शंकर माया के स्वरूप पर प्रकाश डालने में असमर्थ है।

उपर्युक्त आक्षेप के उत्तर में वेदान्तियों का कहना है कि माया के दो कार्य हैं निषेधात्मक कार्य के द्वारा यह ब्रह्म को ढँक लेती है तथा भावात्मक कार्य के द्वारा ब्रह्म के स्थान पर नानारूपात्मक जगत को प्रतिष्ठित करती है।

(iv) अनिर्वचनानुपपत्ति :→ रामानुज का कहना है कि शंकर माया को अनिर्वचनीय कहा है। इनका कहना है कि कोई भी पदार्थ या तो सत् होता है या असत् होता है इससे परे कुछ नहीं होता। अतः माया को अनिर्वचनीय कहना युक्तिसंगत नहीं है।

इस आक्षेप के उत्तर में शंकर के अनुयायियों का कहना है कि माया को सत् और असत् कोटियों से विलक्षण समझना ठीक है। इसे असत् नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसकी प्रतीति होती है। इसे सत् नहीं कहा जा सकता क्योंकि सत् सिर्फ ब्रह्म है। अतः माया या अविद्या को अनिर्वचनीय कहना युक्तिसंगत है।

(v) प्रमाणानुपपत्ति → रामानुज का यह आक्षेप है कि माया का ज्ञान कैसे प्राप्त होता है? अर्थात् किस प्रमाण से माया के विषय में तथ्य ज्ञात होते हैं? प्रत्यक्ष के द्वारा माया का ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता क्योंकि प्रत्यक्ष से जो न सत् है और न असत् है। उसका ज्ञान नहीं मिल सकता। अनुमान भी माया के विषय में कोई ज्ञान नहीं दे सकता। रामानुज का कहना है कि शब्द ज्ञान द्वारा भी उसके संबंध में कोई स्पष्ट ज्ञान नहीं देता क्योंकि उनका विश्वास है कि शास्त्रों में माया को ईश्वर का वास्तविक शक्ति के रूप में माना गया है, न कि एक विचित्र शक्ति के रूप में। इसतरह यह कहा जा सकता है कि माया के ज्ञान प्राप्ति का प्रमाण क्या है, शंकर ने स्पष्ट नहीं किया है।

(vi) निवर्तकानुपपत्ति :→ रामानुज का कहना है कि शंकर अविद्या को "भाव स्वरूपम् अज्ञानम्" कहा है। शंकर का विचार है कि ब्रह्म ज्ञान हो जाने से अविद्या का नाश हो जाता है, लेकिन ब्रह्म जो निर्गुण तथा व्यक्तित्वशून्य है उसका ज्ञान पाना असीमित ज्ञान के लिए भेद नितांत आवश्यक है। अभेद का ज्ञान स्वयं मिथ्या है।

(vii) निवृत्त्यनुपपत्ति :→ रामानुज का आक्षेप है कि अद्वैत-दर्शन में अविद्या का नाश का जो मार्ग बतलाया गया है, वह विरोधात्मक है।

उपर्युक्त व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि आलोचकों ने जो मायावाद की आलोचना की है; उन सभी आलोचनाओं का उत्तर शंकर के अनुयायियों ने संतोषप्रद रूप से दिया है। वस्तुतः शंकर के दर्शन में माया का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इसी के आधार पर इन्होंने विश्व की व्याख्या प्रस्तुत किया है। पाश्चात्य दर्शन में जिसप्रकार Hegal ने Differentia की सहायता से विश्व की व्याख्या प्रस्तुत किया है। उसीप्रकार शंकर माया की सहायता से विश्व की व्याख्या की है। दोनों में अंतर सिर्फ इतना ही है कि जहाँ Hegal ने Differentia के माध्यम से परमसत्ता को विश्व के साथ संबंधित किया है, वहाँ शंकर ब्रह्म को विश्व से परे बतलाया है। शंकर के माया के विषय में इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि One can expond Maya with Sankar or against Sankar but none

We can expond Maya without Sankar. माया को किसी न किसी रूप में इसके अस्तित्व को प्राचीन युग से आधुनिक युग तक स्वीकार किया गया है।

Scanned with CamScanner